दुःख हरण विनती

श्रीपति जिनवर करुणायतनं, दुखहरन तुमारा बाना है।
मत मेरी बार अबार करो, मोहि देहु विमल कल्याना हैं।।टेक।।
त्रैकालिक वस्तु प्रत्यक्ष लखो, तुम सों कछु बात न छाना है।
मेरे उर आरत जो वरतैं, निहचै सब सो तुम जाना है।
अवलोक विथा मत मौन गहो, नहिं मेरा कहीं ठिकाना है।।
हो राजिवलोचन सोचविमोचन, मैं तुमसों हित ठाना है।।१।।
सब ग्रंथनि में निरग्रंथनिने, निरधार यही गणधार कही।
जिननायक ही सब लायक हैं, सुखदायक छायक ज्ञानमही।।
यह बात हमारे कान परी, तब आन तुमारी सरन गही।
क्यों मेरी बार विलंब करो, जिन नाथ कहो वह बात सही।।२।।
काहूको भोग मनोग करो, काहूको स्वर्ग-विमाना है।
काहूको नाग नरेशपती, काहूको ऋद्धि निधाना है।।
अब मोपर क्यों न कृपा करते, यह क्या अंधेर जमाना है।
इन्साफ करो मत देर करो, सुखवृन्द भरो भगवाना है।।३।।
खल कर्म मुझे हैरान किया, तब तुमसों आन पुकारा है।
तुम ही समरत्थ न न्याय करो, तब बंदेका क्या चारा है।।
खल धालक पालक बालक का नृपनीति यही जगसारा है।
तुम नीतिनिपुण त्रैलोकपती, तुमही लगि दौर हमारा है।।४।।
जबसे तुमसे पहिचार भई, तबसे तुमही को माना है।
तुमरे ही शासनका स्वामी, हमको शरना सरधाना है।।
जिनको तुमरी शरनागत हैं, तिनसौ जमराज डराना है।
यह सुजस तुम्हारे सांचेका, सब गावत वेद पुराना है।।५।।
जिसने तुमसे दिलदर्द कहा, तिसका तुमने दुख हाना है।
अघ छोटा मोटा नाशि तुरत, सुख दिया तिन्हें मनमाना है।।
पावकसों शीतल नीर किया, औ चीर बढ़ा असमाना है।
भोजन था जिसके पास नहीं, सो किया कुबेर समाना है।।६।।

चिंतामणि पारस कल्पतरू सुखदायक ये सरधाना है।
तब दासनके सब दास यही, हमरे मनमें ठहराना है।।
तुम भक्तनको सुरइंदपदी, फिर चक्रपतीपद पाना है।
क्या बात कहों विस्तार बड़ी, वे पावै मुक्ति ठिकाना है।।७।।
गति चार चुरासी लाखविषैं, चिन्मूरत मेरा भटका है।
हो दीनबंधु करुणानिधान, अबलों न मिटा वह खटका है।।
जब जोग मिला शिवसाधनका, तब विधन कर्मने हटका है।
तुम विघन हमारे दूर करो सुख देहु निराकुल घटका है।।८।।
गज-ग्राह-ग्रसित उद्धार लिया, ज्यों अंजन तस्कर तारा है।
ज्यों सागर गोपदरूप किया, मैनाका संकट टारा है।।
ज्यों सूलीतैं सिंहासन औं, बेडीको काट गिराया है।
त्यों मेरा संकट दूर करो, प्रभु मोकूं आस तुम्हारा है।।९।।
ज्यों फाटक टेकत पांय खुला, श्री सांप सुमन कर डारा है।
ज्यों खड्ग कुसुम का माल किया, बालक का जहर उतारा है।।
ज्यों सेठ विपत चकचूरि पूर, घर लक्ष्मीसुख विस्तारा है।
त्यों मेरा संकट दूर करो प्रभु, मोकूं आस तुम्हारा है।।१०।।
यद्यपि तुमको रागादि नहीं, यह सत्य सर्वथा जाना है।
चिनमूरति आप अनंतगुनी, नित शुद्धदशा शिवथाना है।।
तद्यपि भक्तनकी भीरि हरो, सुख देत तिन्हें जु सुहाना है।
यह शक्ति अचिंत तुम्हारी का, क्या पावै पार सयाना है।।११।।
दुखखंडन श्रीसुखमंडनका, तुमरा प्रन परम प्रमाना है।
वरदान दया जस कीरत का, तिहुंलोकधुजा फहराना है।।
कमलाधरजी ! कमलाकरजी ! करिये कमला अमलाना है।
अब मेरि विथा अवलोकि रमापति, रंच न बार लगाना है।।१२।।
हो दीनानाथ अनाथहितू, जन दीन अनाथ पुकारी है।
उदयागत कर्मविपाक हलाहल, मोह विथा विस्तारी है।।
ज्यों आप और भवि जीवनकी, ततकाल विथा निरवारी है।
त्यों 'वृंदावन' यह अर्ज करै, प्रभु आज हमारी बारी हैं।।१३।।